♦ द्वितीय अध्याय ♦

"सुहाग के नूपुर उपन्यास की विषयवस्तु"

द्वितीय अध्याय

"सुहाग के नूपुर उपन्यास की विषयवस्तु"

'सुहाग के नूपुर' प्रेमचन्दोत्तर युग के सशक्त रचनाकार अमृतलाल नागर द्वारा लिखा वास्तववादी उपन्यास है । नागर ने उपन्यास के प्रारंभ में 'निवेदनम्' में लिखा है "ईसा की प्रथम शताब्दी में महाकवि इलंगोवन रचित तमिल महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' भारतीय साहित्य की एक अनमोल रचना है । प्रस्तुत उपन्यास उक्त महाकाव्य की कथावस्तु पर आधारित होते हुए भी प्रायः एक स्वतंत्र रचना है ।" लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम त्रिकोण के माध्यम से यह दिखाया है कि पुरुष ना तो पत्नी को देवी का सम्मान दे सकता है और न ही वेश्या को पत्नी के रूप में स्वीकार सकता है । अपनी इस बात को सिध्द करने के लिए उन्होंने कोवलन को चंचल रूपासक्त मन का प्रतीक के रूप में चित्रित किया है । इस उपनयास में कन्नगी और माधवी द्वारा कुलवधु और नगरवधु के संघर्ष को नागर जी ने उत्कृष्ट रीति से रूपायित किया है ।

प्रमुख कथा :

प्रमुख कथा कोवलन-माधवी प्रेमसंबंध, कोवलन-कन्नगी का विवाह और विवाह के बाद कोवलन का कन्नगी के प्रति व्यवहार, कोवलन, माधवी, कन्नगी इन तीन पात्रों मे संघर्ष दिखाकर प्रमुख कथा का चित्रण किया गया है । कथा का प्रारंभ ही कोवलन के स्वागत समारोह से होता है ।

ब्राह्म मुहूर्त में कावेरीपट्टणम् के नौकाघाट पर बहुत भीड़ थी । सुंदर बैलोंवाले शोभनीय रथ, पालकियाँ और घोड़ों पर बैठकर गण्यमान्य चेट्टियार कावेरी नदी के तट पर जा रहे थे । रथों की खड़ - खड़, बैलों की सुमधुर घंटियाँ, घोड़ों की टापे, सारथियों, मशालचियों की आवाज सुनाई दे रही थी । यह सब स्वागत समारोह शहर के प्रतिष्ठित चेट्टियार मासात्तुवान के इकलौते पुत्र कोवलन के लिए हो रहा था । जो धन के साथ - साथ परदेश से सुख्याति ला रहा था । नौकाघाट पर नए पताकाओं से युक्त मणिस्तंभो को नए सिरे से रंगे जाने के कारण मशालों के प्रकाश से वह भी चमचमा रहा था । ऊँचे चबुतरे पर माल के बोरे लदे थे । मध्यभाग में रत्नजटित चँदोवे के नीचे रूई के मोटे मोटे गद्दे बिछे थे । उन पर कारचोबी से कढी हुई चादरें बिछी हुई थी । नगर के दो सर्वश्रेष्ठ धनी व्यापारी सेठ मासात्तुवान और सेठ मानाइहन पास-पास बैठे थे । नगर के अन्य धनी-मानी सेठ भी नौकाओं के आने की प्रतीक्षा

कर रहे थे । कोवलन तो कल ही आनेवाला था, लेकिन उसके पिता ने नौका के द्वारा संदेश भेजा था कि, ब्राह्म मुहूर्त में ही वह अपनी नौकाओं के साथ नगर में प्रवेश करे । कोवलन के आने पर नौकाघाट पर उत्साह की लहर दौड़ गई । शोर मचने लगा । शंख और मंगलवाद्य बजे । ब्राह्मण, भिक्खु और क्षपणक अपने-आपने संप्रदायों में मंगलवाक्य उच्चारने लगे । भव्य चोल सिंहमूर्तियों से युक्त सीढ़ियाँ चढ़कर केवलन ऊपर आया । भावावेश की स्थिति में उसने अपने पिता के चरण छूए । मासात्तुवान ने भी अपने पुत्र को कलेजे से लगाया । पास ही खड़े मानाइहन चेट्टियार भी अपने भावी जमाता को निहार रहे थे । इतने में पिता ने कोवलन को अपने श्वसुर मानाइहन को प्रणाम करने कहा । कोवलन ने सकुचाते हुए अपने श्वसुर के चरण छुए । मानाइहन ने आशीर्वाद देकर पंचमेल रत्नों की भरी हई मुठ्ठियाँ चारों ओर लुटाई ।

आज कोवलन और कन्नगी की सगाई होनेवाली थी । इसकी सूचना कोवलन को कल ही मिल गई थी । स्वागत के लिए आए हुए सभी धनी - मानी सज्जनों से तथा साधुओं से आशीर्वाद लेकर कोवलन अपने मित्रों से भी मिला । चारों ओर खुशी का वातावरण था । कुलपुरोहित ने कोवलन को आदेश दिया कि स्नानोपरांत कावेरी गंगा की पूजा करके ही वह नगर में प्रवेश करे । कोवलन भी अपने मित्रों के साथ गया । वहाँ पर एक अनिंदय सुंदर बाला घाट की सीढ़ियाँ चढ़ते ऊपर आ रही थी । कोवलन उसे देखता ही रहा और वह भी कोवलन की ओर आकर्षित हुई । कोवलन ने तुरंत ही अपने गले का मूल्यवान मोतियों का हार माधवी के गले में डाला । लेकिन माधवी ने तुरंत ही वह माला पास ही बैठ भिखारी के गले में डाली और गर्व से बोली, " आज तो स्वयं महाराज के कंठ से उतरी हुई मुत्तुमालैं ही मेरे गले में पड़ेगी । उसके आगे और मालाएँ झुठी हैं ।" [1] यह कहकर उसने कोवलन को अपमानित किया । लेकिन माधवी की माँ पेरियनायकी यह सगब देख कोवलन से माफी माँगती हैं । कुछ देर बाद कोवलन के मित्र उसे माधवी के नाम से चिढ़ाते हैं । तो कोवलन सदर्प उत्तर देता है कि, " चतुर पुरुष हाट में हिरती-फिरती धनलक्ष्मी और यौवनलक्ष्मी को महत्त्व नही दिया करते मित्र ! वे उस लक्ष्मी का ही वरण करते हैं जो उनके घर में स्थाई रूप से आती है ।" [2] दिनभर नगर मे इसकी चर्चा हुई, कोवलन के श्वसुर और पिता ने उसपर गर्व महसूस किया ।

उसी दिन श्याम को वार्षिक नृत्योत्सव का समारोह था । आज के नृत्योत्सव में माधवी की प्रतिद्वंद्विनी राजम्मा की पुत्री ललिता थी । राजम्मा वंश-परम्परा से प्रतिष्ठित वंजिकुल की थी। नगर के मुख्य नृत्याचार्य शंकरन मुदलियार ललिता के नृत्यगुरु थे । पुहारेश्वरम् की प्रधान

15502

देवदासी तथा नगर के प्रतिष्ठित सामंतगण भी राजम्मा के प्रशंसक थे । सभी लोगों का कहना था कि, इस वर्ष का पुरस्कार ललिता को ही मिलेगा । माधवी वेश्या पेरियनायकी की पोष्यपुत्री थी । उसने माधवी को पढ़ाया-लिखाया, नृत्य और संगीत की शिक्षा दी । पेरियनायकी की बालसखी और एक समय की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी चेलम्मा जिसने राजाव्दारा नृत्य पुरस्कार भी पाया था; वह माधवी की नृत्यगुरु थी ।

नृत्यमंडप आमंत्रित अतिथियों से भर चुका था । सिंहासन पर परम प्रतापी चोल महाराज कारिहर बलवन बैंठे थे । मुख्य अमात्य और मंत्रिगण भी नियत स्थानों पर बैठे थे । नृत्याचार्य शंकरन मुदलियार और पुहारेश्वरम् के मंदिर की प्रधान देवदासी रूद्रम्माल को भी परम्परानुसार महाराज के बाई ओर बैठने का स्थान मिला । सेठ मासात्तुवान और सेठ मानाइहन को भी राजकुल के लोगों के साथ स्थानापन्न किया गया था । कोवलन भी राजकुमारों की युवमंडली में गौरव केसाथ बैठा था। सभी और चर्चा का विषय ललितापक्ष ओर माधवीपक्ष की गरम राजनीति थी । महाराज की आज्ञा से परम्परानुरूप मुख्य देवदासी रूद्रम्माल ने भगवान नटराज की स्तुति में एक पद गाकर नृत्य-प्रतियोगिता आरंभ करने के लिए सभी नर्ताकियों को नियम बताए । सबसे पहले उन नवयुवतियों के नृत्य हुए जिनका महत्त्व माधवी और ललिता के कारण शुरू से ही दब गया था। माधवी और ललिता के भी नृत्य हुए । लेकिन यह निर्णय करना कठिन हुआ कि, इन दोनों मे से सर्वश्रेष्ठ कौन है ? निर्णायक एकमत न होने से यह घोषणा हुई कि इस वर्ष का पुरस्कार किसी को भी नहीं दिया जाएगा । यह सुनते ही माधवी ने उठकर भरी सभा में महाराज से निवेदन किया कि, जब तक निर्णय नही होता तब तक मैं ओर ललिता नृत्य करेंगे । बाद में नृत्य परीक्षा कर आप उचित निर्णय दे दीजिए । सभी ने इस प्रस्ताव को मान्यता दीं । नृत्य परीक्षा लेने शंकरन मुदालियार बैठे । वे कठिन से कठिन बोल बोलते; ता कि उन्हें विश्वास था कि उनकी शिष्या ललिता के सिवाय इतना गूढ़ शास्त्रीय नृत्य कोई नहीं जानता। लेकिन नृत्यगुरु चेलम्मा ने माधवी को ऐसे लटके सिखाए थे कि माधवी के आत्मविश्वास और नृत्य से वह अधिक चमकती गई और ललिता झुँझलाहट और तपन से निस्तेज होती गई । अंत मे माधवी को ' कामदेव का नवधनुष ' की उपाधि से पुरस्कृत किया गया । माधवी ने इस पुरस्कार के साथ-साथ कोवलन को भी जीत लिया था । दोनों एक-दूसरे की ओर आकर्षित हुए ।

पुरस्कार विजयिनी माधवी को रथ पर बिठाकर पूरे नगर में घुमाया गया । नगर के अनेक धनी- मानी युवक माधवी को उपहार देकर उससे प्रेम की भीख माँग रहे थे ।

पेरियनायकी के घर उस रात बड़ा उत्सव मनाया गया । पेरियनायकी ने कोवलन को संदेश पहुँचाया कि उसकी माधवी उसके लिए तड़प रही है । कोवलन ने माधवी को एक लाख आठ कलुंज और कुछ रत्नाभूषण उपहार के रूप में भेज दिए । वेश्या पेरियनायकी ने अपनी कुटिल नीति से कोवलन को पत्र भेजा और पान्सा के उद्यान भवन में माधवी तुम्हारा इंतजार कर रही है, यह संदेश दिया । कोवलन रात को लुक-छिपकर आया करता था । उसके पिता को इस वेश्या प्रेम के बारे में कुछ भी पता नही था । गुप्तता से संकेतस्थल पर वह माधवी से मिलने आया । माधवी ने रूठने का अभिनय किया । कोवलन के साथ आँखो का खेल-खेलकर वह उसे क्षमा और प्रेम का याचक बना रही थी । माधवी के वस्त्र के स्पर्श सें उसके शरीर में विदयुत्तरंग दौड रही थी । माधवी अपना मुँह छिपाकर उसे सता रही थी । माधवी के हाथ पर हाथ रखकर उसने बलपूर्वक माधवी को अपनी बाँहो में ले लिया । अपने प्रिय की बाँहो से छुटने का प्रयास कर माधवी ने कोवलन और कन्नगी के विवाह की बात छेड दी । कोवलन हँसकर बोला, "वह तो जग की रीति निभाऊँगा प्रिये! अरे,मैं श्वसुर के धनरूपी घी को होम का स्रुवा बनकर निजकुल के ऐश्वर्ययज्ञ की आहुति बनाने जा रहा हूँ, इससे ममेरी लक्ष्मी की लौ ऊँची उठेगी ।"[3]

कोवलन माधवी को समझाना चाहता है कि, वह केवल पिता की इच्छा और श्वसूर के धन के लिए कन्नगी से विवाह कर रहा है । उसके पिता और श्वयुर ने अपनी इकलौती संतानों का विवाह देश-विदेश में अपने कुलगौरव को बढ़ाने के लिऐ ही तय किया है । विदेश में व्यापारिक साख बनाकर कोवलन खूब नाम कमाए यही उनकी इच्छा थी । लेकिन कोवलन-माधवी के प्रेम से वे दोनों भी अनजान थे ।

कोवलन सिर्फ धन के लिए ही कन्नगी से शादी कर रहा है , यह पता चलते ही माधवी उसे कहती है , "लक्ष्मी की लौ उठाने के लिए मेरे मनोदीप को इस प्रकार बुझाने की क्या आवश्यकता थी ! मुझसे कहते , तुम्हारी धनतृष्णा मिटाने के लिए मेरे पास भी अतुल संपत्ति है।" [4] यह सुनते ही कोवलन गुस्से से आग बबुला होता है , प्रिय का यह रूप देखकर माधवी भय से थर-थर काँपने लगी । उसका भयभित रूप देख कोवलन ने अपने हाथ की कटार फेंक दी । माधवी कोवलन के चरणों पर गिरकर फुट-फुटकर रोने लगी । यह सब देख कोवलन ने माधवी को अपने स्नेहभरे हाथों से उठाया । माधवी उसे कहने लगी , "इस लोक में कोई भी इस अभागिन वेश्या के एकनिष्ठ प्रेमपर विश्वास न करेगा , तुम भी नहीं । ऐसे जीवन से मृत्यु लाख गुना अधिक मीठी है ।" [5] यह कहकर वह हाथ में कटार लेकर अपना अंत करने लगी ,

तब कोवलन ने झट से कटार को दूर फेंक कर माधवी को अपने अलिंगन में बाँधा । उस ने माधवी को समझाया कि मैं अपने कुलगौरवपर किसी भी कीमत पर आँच आने नहीं दूँगा । माधवी भी अपने प्रिय की बाँहों में लिपटकर शांती का अनुभव करती है । कोवलन को मनवाती है कि तुम्हे जीवनभर मेरा प्यार स्वीकार करना ही होगा । अपने जादूभरे चुंबन से वह कोवलन को मुग्ध करती है । कोवलन भी कहता है , "तुम्हारे प्रेमधन को पाने के लिए मैं सदा तुम्हारे द्वार का भिखारी बना रहूँगा माधवी ! मैं तुम्हारे आकर्षण से विवश हूँ , अपने-आपसे विवश हूँ।" [6] यह सब सुनकर माधवी चुप नहीं बैठती । वह वेश्या होकर भी कोवलन से एकनिष्ठ प्रेम कर उसकी पत्नी बनना चाहती है । वह कोवलन से बार-बार पूँछती है कि उसमें और कन्नगी में क्या अंतर है ? तुम मुझे पत्नी का अधिकार क्यों नहीं दे सकते ? एक स्त्री होकर भी मैं इन अधिकरों से वंचित इसलिए हूँ कि बचपन में मुझे एक वेश्या ने खरीद लिया ? समाज हमारे रिश्ते को मान्यता क्यों नहीं देता ? वह मन का भाव कोवलन तक पहुँचाना चाहती है । तब कोवलन गंभीर स्वर में कहता है , "इस विवशता को हँसकर स्वीकार करना ही तुम्हारे लिए अच्छा होगा माधवी ! यह मेरी या तुम्हारी इच्छा-अनिच्छा का प्रश्न नहीं । विवाह समाज का आवश्यक नियम है ।" [7] यह सूनकर माधवी निराश होकर सोचती है कि , वेश्याओं का जीवन इन सेठ , साहुकार , महाजनों के लिए केवल कोरा विलास है । ये लोग कभी हमारी ओर एक स्त्री की दृष्टि से नहीं देखेंगे । स्त्री के सभी नैसर्गिक गुण होकर भी समाज हमें वेश्या जीवन जीने के लिए मजबूर करता है । ये उच्च-वर्गीय लोग जब अपनी विलासपूर्ति के लिए हमारे पास आते है , तब इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा क्यों कम नहीं होती ? इन विचारों में माधवी खो जाती है ।

कुछ देर बात माधवी अपने आपको सँभालकर कोवलन को मदिरा पिलाती है । मदिरा के नशे में कोवलन डूब जाता है । माधवी अपनी मीठी-मीठी बातों से उसका मन बहलाती रहती है।

कोवलन उसके लिए कुछ भी करने को तैयार है । वह माधवी से कहता है तुम्हें कुछ भी चाहिए तो माँग सकती हो । मदिरा के नशे में धूत वह बोलता ही जाता है । माधवी उसके मन को भाँपकर आँखों से आँखें मिलाकर कहती है , "माँगती हूँ । कन्नगी के सपनों की पहली रात तुम मेरे यहाँ रहोगे और ..... तुम्हारी कन्नगी मेरी नागरत्ना की तरह तुम्हारी और मेरी सेवा में ....." [8] यह सुनकर कोवलन तुरंत वचनबद्ध होता है । वह नशे में बोलता ही रहता है । माधवी नृत्योत्सव में तुमने केवल महाराज के गले की ही माला नहीं जीती बल्कि मुझे , मेरे हृदय

को भी जीता है । तुम्हारे कलाचातुर्य ने ही मेरे दिल में प्रेम की ज्योत जलाई , जो हमेशा मेरे दिल को प्रकाशमान करेंगी । मैं मानाइहन की बेटी कन्नगी से विवाह तो करूँगा लेकिन मैं हमेशा से तुम्हारा ही प्रेमपुजारी बनकर रहूँगा । यह सब सुनकर माधवी की आँखे छलक पड़ी । उसके मन का भाव और सत्य ही आभा उसके मुखमंडल पर दीप्त हो उठी । वह कोलवन को टकटकी बाँधकर आवेश के साथ देखती ही रही । उसे अपने प्रेमी पर नाज था । कोवलन से वचन लेकर वह खुद को महाविजयिनी समझकर आनन्दोन्मत हो उठी । अपनी माँ और मौसी के उपदेशों की अग्नि-रेखा पार करके उसका प्रेम निष्ठा से आगे बढ रहा था ।

एक दिन माधवी अपनी नृत्यगुरु और मौसी चेलम्मा से मिलने गई थी । उसी दिन सेठ मानाइहन ने पेरियनायकी के यहाँ, उसकी पुत्री के विवाहोत्सव पर नृत्य करने के लिए माधवी को आमंत्रण भेजा । यह सुनकर पेरियनायकी बहुत खुश हुई । उसने तुरंत सेवक भेजकर माधवी को मौसी के घर से वापस आने का बुलावा भेजा । लेकिन माधवी आज वहीं पर रहेगी यह संदेश पाकर पेरियनायकी खुद यह खुशखबरी माधवी को सुनाने के लिए वहाँ पर गई जाती है । चेलम्मा और पेरियनायकी जब विवाहोत्सव के धूमधाम की बाते कर रही थी तो माधवी का रोम-रोम जल रहा था । उसे कोवलन-कन्नगी के विवाह की बातें अच्छी नहीं लगती । माधवी को उनके विवाह पर नृत्य का निमंत्रण मिलने की बात पता चलने पर वह घुटन से खीज उठती है । वह सोचती है , सभामंडप में सभी लोगों के सामने कन्नगी कोवलन के साथ सुंदर सिहांसन पर बैठकर सबका आकर्षण केंद्र बनेगी और उसके सामने वह केवल धन के लिए नाचेगी । माधवी किसी भी कीमत पर खुद को कन्नगी के सामने हीन नहीं बनना चाहती थी । वह केवल कोवलन को चाहती है और कोवलन को ही अपने नृत्य से रिझाना चाहती है । इसलिए विवाहोत्सवपर नाचने से वह इन्कार करती है । तब माँ और मौसी दोनों मिलकर उसे समझती है कि दूर-दूर के बड़े-बड़े व्यापारी , सेठ , साहुकार तुम्हारा नृत्य देखेंगे और हमारे नगर की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी होने के नाते तू ही नगर की मानरक्षा करेगी । विभिन्न प्रातों से अनेक नर्तकियों का भी नृत्य होनेवाला है, उसमें तुम्हें ही सबकी वाह-वाही और धन जीतना होगा । लेकिन माधवी को यह सब मंजूर नहीं , वह भिखारी बनने के लिए तैयार है लेकिन कन्नगी के सामने धन के लिए नाचना उसे मंजूर नहीं है । तब वह किसी की भी बाते सुनने को तैयार नहीं । चेलम्मा माधवी से कहती है , "बेटी ! प्रेम के लिए धन का तिरस्कार करने से पहले एक बार अपने प्रेमी से भी तो पूँछ देख ! क्या कोवलन चेट्टियार भी तेरे समान ही धन का त्याग कर

सकेंगे ? क्या वे भी भीख माँगकर मात्र तेरे प्रेमबंधन से ही संतुष्ट रह सकेंगे ? " [9] यह सब सुन माधवी चुप रहती है । वह दोनों माधवी को समझाने लगती है कि सभी पुरुष हमारे पास अपने मन को रिझाने आते है । वे हमे जीवनभर नहीं अपनाते । हमें भी उन्हें झूठा प्रेम देकर उनसे पैसे लेना ही पडता है , इसे ही वेश्याओं की दुनियादारी कहते है । लेकिन माधवी अंत तक उन दो हवेलियों मे कन्नगी के सामने न नाचने की ठान लेती है । कभी भी वह उससे अपने आपको हीन नहीं बनाना चाहती । माधवी रूठकर चली जाती है । अंत में चेलम्मा कोवलन-कन्नगी के विवाह पर नृत्य करने के रूप में माधवी से गुरुदक्षिणा माँगती है । तब माधवी तैयार हो जाती है । लेकिन उसके मुखपर उदासी छा जाती है ।

सप्तमी की तिथि पर कोवलन और कन्नगी के विवाह का आयोजन किया जाता है । इन दोनों का विवाह मानो कावेरीपट्टणम् नगर के इतिहास में अनोखा शुभ अवसर माना गया है । पूरे दक्षिण भारत के सर्वश्रेष्ठ दो अतुल धनाधीशों की इकलौती संतानों का प्रणयबंधन समारोह नगर के सभी छोटे-बड़े व्यापारियों के लिए धन कमाने का यथायोग्य अवसर साध रहा था । इस विवाह के लिए दूर-दूर के उद्योगपति सेठ मासात्तुवान और सेठ मानाइहन के अतिथि बनकर नगर में पधार रहे थे । सभी लोग, व्यापारी छोटे-बड़े सौदे कर धन कमाने के लिए जुट गये थे। वेश्या अम्माएँ भी अपनी सुंदर कन्याओं को साज-सवाँरकर सेठ , साहुकार , व्यापरियों की दृष्टि में आने के लिए प्रयत्नरत थी । अतिथि श्रेष्ठिगण नगर घुमने निकलते तो उनके संबंध में बहुत बातें होती थी । भिखारी भी सभी की जयजयकार कर अपना दारिद्रयदोष मिटाकर धन कमाने के पिछे लगे हुए थे । कावेरीपट्टणम् नगर सीप के बरतन और खिलौने बनानेवालों के कारण देश-विदेश में प्रसिध्द था , वे लोंग भी उत्साह के साथ इस अवसर का लाभ उठाकर धन कमा रहे थे । भिखारी , ब्राह्मण और श्रमण आदि सभी धर्मपंडित आशीर्वाद बेच-बेचकर परस्पर लड-झगड़कर धन कमा रहे थे । मोती, मिर्च, मसालेवाले व्यापारी भी इसका लाभ उठा रहे थे । लोग उत्साह से बातें कर तथा चाटुकारिता कर कोवलन-कन्नगी की जोडी को दुआएँ दे रहे थे , तो कोई मासात्तुवान और मानाइहन के गुणगान गा रहा था । सेठ मासात्तुवान ने अपनी पतोहू के लिए मदुरा की पांड्य पटरानी के नूपुरों जैसे सुहाग के नूपुर बनवाकर चारों ओर चर्चा की धूम मचा दी थी । तो कुछ लोग सायंकाल होनेवाले नृत्यसमारोह में माधवी के नृत्याविष्कार की प्रशंसा कर रहे थे । चारों ओर उत्साह और चमक-दमक दिखाई दे रही थी । सप्तमी के दिन

ब्राह्म मुहूर्त में कोवलन और कन्नगी का भाग्य अग्नि की साक्षी में मंत्रों की शक्ति से जोड दिया गया ।

कन्नगी के पिता के घर उस दिन वर-वधू को लेकर पूजा की विधियाँ चलती रही । शिविकाओं पर बैठकर धनी-मानी सेठ अपनी पत्नियों के साथ पधार रहे थे । गृहलक्ष्मियों के शरीर पर आभूषण सारे कोठे और दालानों को जगमगा रहे थे । दास-दासियाँ अपने कामों में व्यस्त थे । नृत्यासमारोह के लिए हवेली के पास ही अत्यंत सुदर ढंग से विशाल , आँखो को अनुपम सुख देनेवाला मंडप सजाया गया था । केले के थंभे, फूल, पत्ते और रंगीन वस्त्रों से मंडप को आकर्षक रूप से सजाया गया था । सगे-संबधियों , प्रमुख अतिथियों के लिए बैठने की व्यवस्था बहुत अच्छी तरह से की थी । मुख्य मंडप स्वर्ण और रजत दण्डों पर खड़ा किया था । बंदनवारों में भी रत्नों का ही उपयोग किया था । दीपक भी ठोस सोने के थे और रत्नों से जड़े थे । मुख्य मंडप में वर-वधु के लिए एक अत्यंत सुंशोभित स्वर्ण-सिहांसन रखा गया था । माधवी की नृत्यगुरु चेलम्मा को भी इस समारोह में विशेष आमंत्रण देकर उनके बैठने की विशेष व्यवस्था की गई थी ।

मिस्रदेशीय सेठ कमर से घुटने तक भव्य रेशमी वस्त्र लपेटकर , स्वर्ण के नक्काशीदार , जालीदार टोप पहने , गले में सोने के कालर तथा रत्नहार तथा मुँदरियाँ , कंकण पहनकर इस समारोह में काफी सज-धजकर आए थे । यूनानी तथा रोम निवासी सेठ तो घुटनों के ऊपर तक जाँघिया , तस्मों से बँधे जूते ,रेशमी कमरपट्ट से बँधा सूती कूर्ता , सुनहरे बालों को सोने की जड़ाऊ , पट्टी से साधे दाढी-मूँछोवालें यूनानी बड़े शान से अपनी संस्कृति का प्रदर्शन कर रहे थे । भारतीय सेठों ने सुनहरे तारों के किनारीदार घुटने तक अंगवस्त्रम् पहने , गले में माणिय , मुक्ता , मरकत , वैदूर्य के मूल्यवान कंठे , हार , कंकण , कुंडलकिरीट आदि सभी आभूषणों से सज-धजकर इस विवाह में शामिल हुए थे । मंडप में सुवासित पुष्पमालाएँ देकर अतिथियों को आदर-सम्मान के साथ बिठाया जा रहा था । सभी अतिथि स्थानापन्न होते ही सेवकगण उनके चरण पोंछकर गंधलेपन करते थे । मुख्य मंडप में वर-वधु तथा समधी सेठ मासात्तुवान , महाराज करिहर बलवन के पितृव्य चेर , पांड्य राजकुलों के प्रतिनिधि , उत्तर भारत के मथुरा , काशी , श्रावस्ती के सेठ आदि प्रमुख मेहमानों को बैठने की व्यवस्था की गई थी । अतिथियों के मनोरंजनार्थ जादूगर के खेल दिखाए जा रहे थे । कुछ व्यापारी स्वदेशी गुट बनाकर तो कुछ अंतर्देशीय गुट बनाकर बातें कर रहे थे ।

मुख्य अतिथियों के पधारने के बाद मध्यासन पर वर-वधु स्थानापन्न हुए । विवाह अत्यंत उत्कृष्ट ढंग से संपन्न हुआ । संगीत-नृत्य का कार्यक्रम भी शुरू हुआ। माधवी अपने नृत्यगुरू का आशीर्वाद लेकर सभामंडप में इस तरह घुँघरू ठनकाने लगी की वह अपने नृत्यनूपुरों से कन्नगी के सुहाग के नूपुरों को चुनौती देने लगी । अपने प्रत्येक नृत्य का अविष्कार दिखाकर वह सब को मुग्ध करती जा रही थी। बिजली की तरह कौंधकर वह अपने चंचल नयनों के वार से अतिथियों का घायल कर रही थी। सबके सामने वह कोवलन को जादू का स्पर्श देकर चली जाती और कोवलन माधवीमय होकर उसे ऐसे ताक रहा था कि, वह पिता और श्वसुर की उपस्थिति भी भूल गया ।

सेठ मासात्तुवान ने भी अपनी पुत्रवधु और नई कुललक्ष्मी का स्वागत बडे उत्साह के साथ किया। वधु के गृह-प्रवेश के बाद पंडितों और स्त्रियोंद्वारा आवश्यक पूजा-अर्चना के बाद वे अपनी बहु को मुख्य कोषागार में ले जागर वधु से लक्ष्मी का पूजन करवाकर , उसके हाथों में चाबियाँ सौंपी । उन्होंने पुत्रवधु को आशीर्वाद देकर खूब दानधर्म , सदावर्त किए । उनके दानधर्म से भिखारियों का दारिद्रयदोष मिट गया । सभी ओर मासात्तुवान के गुणगान होने लगे ।

कोवलन अपनी सुहाग रात पर कन्नगी से पूछता है तुम कौन हो? डरकर कन्नगी अपने पति के चरण छूकर खुद को उसकी दासी बताती है। कोवलन खुश होकर उसे कहता है कि तुम कितनी भी सुंदर क्यों न हो लेकिन मेरे लिए तुम्हारा मूल्य कौड़ी भर का भी नहीं । तुम्हें किसी से कुछ न कहे मेरे साथ चुपचाप चलना होगा । कन्नगी चुपचाप केवल कोवलन की बातें सुनती है। कोवलन कन्नगी को लेकर माधवी के कोठे पर आकर माधवी से कहता है, 'लो प्रिये ! तुम्हारी नई दासी को ले आया ।" [10] कन्नगी शांत भाव से सहमी खड़ी थी । माधवी को किसी का भी ध्यान न रहा । वह अपने प्रिय के मुखचंद्रमा को निहारती रही। ईर्ष्या और जलन में माधवी कन्नगी की ओर बढ़कर बोली, "परसों अपने विवाह के उत्सव में स्वर्णसिंहासन पर मेरे प्राणपति के साथ बैठकर नई सेठानी ने अपने पिता की कोठी में मेरा नृत्य देखा था । आज मेरे कोठे पर सेठानी नृत्य करेंगी और मैं अपने प्रिय के साथ बैठकर देखूँगी ।" [11] माधवी की माँ उसे समझाने की प्रयास करती है, लेकिन माधवी कुछ सुनना नहीं चाहती, वह तो केवल यह देखना चाहती है कि कन्नगी में ऐसा क्या है जो मुझमें नहीं है? जिस कारण वह सामाजिक रूप से कोवलन पर अधिकार जमाती है। माधवी अपनी घृणाभरी बातें बोलती ही जाती है सभी दास-दासियाँ, पेरियनायकी सभी यह तमाशा देखते ही रहते है । कोवलन मदिरा

के नशे में वहीं पर लेटा रहता है। माधवी कन्नगी से बार-बार घँगरू बाँधने को कहती है। तब कन्नगी अत्यंत शांत और संयतिम होकर बोलती है, "बहन ! मेरे देवतुल्य पतिकुल ने सुहाग के नूपुरों से मेरे पैरों को बाँध दिया है । ये घुँघरू तुम्हारे ही पैरों में शोभा पाएँगे ।" [12]

कन्नगी की बाते सून माधवी उपेक्षाभरी दृष्टि से देख व्यंग्य से कहती है कि तुम्हारे नूपुर कोवलन को नहीं रिझा सकते, वह शक्ति केवल मेरे ही घुँघरूओं में है । कन्नगी उसे शांत भाव से समझाती है कि मुझे तुमसे या तुम्हारे घुँघरूओं से मुझे ईर्ष्या नहीं है । तुम अपनी परिस्थिति के कारण ही ऐसी बनी हो । उसमें तुम्हारा दोष नहीं । कन्नगी की बातें सुन माधवी परास्त हो जाती है । क्योंकि माधवी को भी सबकुछ ऐसा ही लगता था । कोवलन मदिरा के नशे में माधवी की दासियों के साथ खेल रहा था । यह सब देख माधवी अपनी दासियों पर चीढ़कर कोवलन से दूर हटने को कहती है । कोवलन उठकर माधवी को तमाचा मारकर भला-बुरा कहता है और तुम मेरे प्रेम के काबिल नहीं हो यह कहकर कन्नगी की ओर बढ़ता है । कन्नगी को भरी आँखों से देख वह कहता है , "कितनी सुंदर सलोनी ! .... कितली शांत ! इसने आते ही मेरे लिए कितना सहा है ! .... और मैंने भी इस पापिष्ठा , अहंकारिणी के लिए कितना सहा है । काँच के लोभ में मैंने हीरे का तिरस्कार किया । छिः छिः । " [13] यह कहकर कोवलन अपनी नववधु को लेकर हवेली लौटकर आता है । कन्नगी से क्षमायाचना करता है । कन्नगी को माधवी के कोठे पर ले जाने की बात सारे नगर में फैल जाती है । मासात्तुवान के लिए अपने पुत्र के संबंध में ऐसी अकल्पनीय बातें असह्य थी । उन्होंने कन्नगी से अकेले में कल रात की घटना के संबंध में पूछा, तो कन्नगी ने पति का साथ दिया । लेकिन उन्होंने अपने कुलांगार को दोष देकर उससे बातचीत करना छोड दिया । कोवलन अपने श्वसुर के पास जाकर माफी माँगता है । मानाइहन उसे ठीक तरह से समझाकर अपने कारोबार की जिम्मेदारी कोवलन पर सौंपते है , ताकि काम में उलझने से कोवलन का ध्यान अन्यत्र नहीं जाएगा । कोवलन व्यापार में मन लगाकर माधवी को भूलाने की कोशिश कर रहा था । सेठ मासात्तुवान और मानाइहन नगर में वेश्याओं के खिलाफ नैतिक आंदोलन चलाते है ।

इन सभी घटनाओं से माधवी ज्वर से बेसुध हो जाती है । तब पान्सा सेठ जो वेश्या पेरियनायकी का प्रेमी था , वह यूनानी चिकित्सकों को भेजकर माधवी का इलाज करवाता है । कोवलन और मानाइहन सेठ रोमन व्यापारी पान्सा सेठ पर व्यापारिक दबाव डालते है कि, वह माधवी को अपने घर से निकाल दे । लेकिन पान्सा माधवी को पुत्री के रूप में मानते थे।

माधवी को अपने घर से निकाल दे । लेकिन पान्सा माधवी को पुत्री के रूप में मानते थे । इसलिए वे पेरियनायकी और माधवी को किसी भी कीमत पर दुख नहीं देना चाहते । माधवी के ठीक होते ही पेरियनायकी उसे समझाती है । लेकिन माधवी कोवलन के विरह में तड़पकर खुद को भी भूल जाती है ।

कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को लेकर व्यापार करने के उद्देश्य से विदेश चला जाता हैं। इससे पिता और श्वसुर दोनों भी खुश होते है । सभी देवी-देवताओं की पूजा कर धर्मपंडितों का आशीर्वाद लेकर तथा नगर के सभी गुरुजन और प्रियजनों की शुभकामनाएँ साथ लेकर मासात्तुवान ने अपने पुत्र को अंतिम आलिंगन देकर विदा किया । यात्रा के दौरान कन्नगी की प्रबंधपटुता देख कोवलन उसपर रीझने लगा । कन्नगी अपने पति की ओर पूर्ण रूप से सहज समर्पित होती है । कोवलन में यह विश्वास निर्माण हो रहा था कि वह अपनी पत्नी को छोडकर किसी और को प्यार नहीं करता । कन्नगी भी जहाज में समुद्री लहरों का भय देख पति के मोहभरे अलिंगन में बँध जाती। अनेक बंदरगाहों को पार कर कोवलन सिंकदरिया पहुँच गया ।

सिंकदरिया मिस्र का अत्यंत समृध्दिशाली नगर था । सारे दुनियाभर के व्यापारी वहाँ पर व्यापार के लिए इकठ्ठा होते थे । सिंकदरिया पर यूनानी और रोमनों का प्रभाव होने से वह एक बडा व्यापारिक केंद्र बन गया था । सिंकदरिया यूनान और मिस्र के देवी-देवताओं का धार्मिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का संगमस्थल था । पत्थर की ऊँची-ऊँची भव्य अट्टालिकाओंवला सिंकदरिया नगर बडा नयनभिराम था । सड़कों पर रथों , ऊँटो और गधों का अविराम आना-जाना लगा रहता था । नाना तरह के लोग वर्ण , वेश , भाषां आदि दृष्टियों से वहाँ पर विविधता दिखाई देती थी । कोवलन और कन्नगी भी यहाँ व्यापार के लिए आते है । ये दोनो अमहोज के बड़े भाई सिंकदस के अतिथि थे । उनकी सुख-सुविधाओं के लिए राजसी प्रबंध किया गया था । उनकी व्यापारिक कोठियों में द्विभाषिए कारिंदे थे । कोवलन और सिंकदस ने अपने-अपने देश की व्यापारिक हलचलों की बातचीत की । फिर कोवलन चतुर बनिये की तरह अन्य व्यापारियों से मिलकर उचित लाभ पाने के लिए सिंकदस से व्यापारिक रूप से वचनबध्द नहीं होता ।

सेठ सिंकदस ने भारतीय सेठ कोवलन और कन्नगी के स्वागत में बहुत बड़ा भव्य आयोजन किया । पत्थर के मोटे-मोटे भव्य खंबोवाले विशाल कक्ष में किनारे-किनारे चारों ओर सुंदर कुरसियाँ , उनपर रंग-बिरंगे रेशमी वस्त्र अच्छादित थे । खंभें , छतें , दीवारें

आकर्षक रंगों से रँगी हुई थी । कमरें में चारों ओर दीवारों से सटी हुई पत्थर की विशालकाय मूर्तियाँ थी, जो सिंकदस और अमहोज के पूरखों की थीं । जैसे ही सभामंडप में अतिथियों ने प्रवेश किया , वादक-वादिकाओं ने हार्प , बाँसुरी और अलगोजे बचाने शुरू किए । दासियों ने प्यालों में मदिरा भरकर ला दी । सुंदर दासियाँ सेठों को मालाएँ पहनाती, सुगंधित फूलों के गुच्छे देती , उनके पैरो को सुगंधी चूर्ण से मलती । नारी , मदिरा , गीत , वाद्ययवृंद , भोजनसामग्री यह सबकुछ व्यावसायिक बातों को प्रेरणा देने के लिए ही था । सिंकदरिया के अन्य व्यापारियों ने भी कोवलन को सपत्नी आने का न्यौता भेजा । कोवलन-कन्नगी ने ओसिरिस , आइसिस , हथर, होरस , रा , खोंसु , सेविक , ख्नुमु आदि मिस्र के प्राचीन देवी-देवताओं के दर्शन किए । अपने युग से हजार-दो हजार वर्ष पूर्व के प्राचीन महाराजाओं , फरऊनों के समाधिगृह देखे ।

एक दिन सिंकदस सेठ की पत्नी ने कन्नगी की भेंट भविष्यवक्ता भिक्षुणी से कराई । वह कन्नगी का भविष्य देख गंभीर हो गई । कन्नगी के बार-बार पूछने पर , प्रार्थना करने पर उसने उसे एक कथा सुनाई । मिस्र में बहुत पहले एक फरऊन नाम का राजा था । उसके पास संतान को छोड़कर सबकुछ था । देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना से उसे एक पुत्र भी हुआ था । लेकिन एक भविष्यवक्ता भिक्षुणी ने उस बालक की मृत्यु कुत्ते , घड़ियाल या संर्पदंश के द्वारा बताई । वह बालक बड़ा हुआ । स्वतंत्र जीवन जीने के हठ से वह नहरीना देश पहुँचा । वहाँ के राजा ने अपनी सुंदर कन्या को पहाडी पर सात सौ फुट ऊँची मीनार बनवाकर उसे वहाँ पर रखा था । उसने घोषणा की कि जो मीनार चढकर राजकुमारी से मिलेगा वही उसका पति होगा । अचानक मिस्र का राजकुमार जोश में आकर सभी विघ्न बाधाओं को पार कर राजकुमारी के पास पहुँचा । उन दोनों का विवाह हुआ । राजकुमार ने राजकुमारी से अपने मरणमय की बात बताई । तो राजकुमारी ने अपने सौभाग्य को सुरक्षित रखने के लिए एक दिन सर्प और घड़ियाल को मारा लेकिन कुत्ते से अपने सुहाग देवता को न बचा सकी । वह राजकुमार मर गया । यह कहानी सूनकर कन्नगी को उस भिक्षुणी ने क्या कहा, यह समझ में नहीं आया । कुछ दिनों में मानइहन चेट्टियार ने जहाजद्वारा संदेश भेजा कि दोनों जितनी जल्दी हो स्वदेश लौट आए । कोवलन ने सारा माल सिंकदरिया में बेचकर , ऊँचा लाभ उठाकर स्वदेश लौट आया ।

पिता की मृत्यु होने से कोवलन् का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया था । उसने मानइहन और मासात्तुवान की व्यापारिक पेढ़ियों का संगठन कर सम्मिलित व्यापारिक नीति से कारोबार शुरू किया। केवल कावेरीपट्टणम् में ही नहीं , समस्त दक्षिण भारत में कोवलन चेट्टियार की

स्थिति निश्चित रूप से अनन्य हो गई । सभी छोटे-बड़े व्यापारियों से कोवलन घिरा रहता था । रोमन व्यापारी पान्सा सेठ का प्रभाव कोवलन के कारण लुप्त हो गया । कोवलन का व्यापारिक महत्त्व बढने लगा । सभी ओर केवल उसके नाम का ही बोलबाला था ।

इन दिनों माधवी के दिन सुने बित रहें थे । उसने श्रृंगार करना छोड़ दिया था । वह किसी से ज्यादा बोलती भी नहीं थी । रात में वह छत पर बैठकर चुपचाप चाँद-तारों को साक्षी बनाकर प्रिय के प्रति अपनी बातों को वायुमंडल में लय करती थी । माधवी इस परिस्थिति से व्याकुल हो आर्त रूप से बावली होती जा रही थी । कोवलन ही उसके मन , अहंकार , उसकी साँस-साँस का आधार बन चुका था । उसे अब पता चल चुका था कि उससे गुमान में बड़ी भूल हो गई है । वह अपना सौंदर्य , कला , धन , वैभव , एकाधिपत्य का मोह , गर्व सब कुछ भूल चुकी थी । लेकिन अपने मन से एक ही बात भूला नही पाती और वह है नृत्यसभा में कोवलन को जीतने का गर्व । नृत्यसभा में कोवलन का उसकी ओर ताकना , माधवी का शर्माना और बाद में टकटकी साध दोनों का मुस्कुराना उसे क्षणभर भी भूलने नहीं देता । वह कोवलन के वियोग में तड़प रही थी । जब कोवलन और कन्नगी विदेश गये थे , तब माधवी चेट्टियार सकुशल घर लौट आए इसलिए मणिमेखला देवी से आन माँगती है । जब कोवलन सकुशल नगर लौटता है , तब वह आन पूरी करके साधुओं-भिक्षुओं में प्रसाद बाँटती है । धूमधाम से प्रसाद बाँटने की बात पर माधवी और उसकी माँ के बीच अनबन होती है । जिस कारण दोनों अलग-अलग रहने लगती है । इस से नगर के लोगों में कौतुहल उत्पन्न होता है । अन्य वेश्याएँ जान-बूझकर पेरियनायकी और माधवी को ताने मारती है । माधवी चुपचाप लोगों की बाते सुनती है । कोवलन को भी यह समाचार मिलता है । मानाइहन सेठ ने चारों ओर गुप्तचर भेजकर अपने जमाता और माधवी पर ध्यान रखा । लेकिन इन बातों का कोवलन पर कोई भी प्रभाव न देख मानाइहन खुश हुऐ । कोवलन ने नृत्य , संगीत , मदिरा आदि सभी से मुँह मोड लिया था। वह केवल साधुओं , पंडितों के उपदेशों पर ही अपना ध्यान केंद्रित कर रहा था । दोनों पति-पत्नी मिलकर घर में कोई-न-कोई धार्मिक उत्सव , पाठ-पूजा करते रहते है ।

नगर में सभी ओर यही चर्चा थी कि माधवी कोवलन के बिना अपने प्राण त्याग देगी । उसने नृत्य , संगीत श्रृंगार से अपना मुँह मोड लिया था । वह कोवलन के वियोग में विरहवेश धारण कर केवल एक जीते-जागते मुर्दे की तरह जी रही थी । यह बात कोवलन को पता चली। तब माधवी द्वारा रिझाया गया प्रत्येक क्षण याद कर-करके कोवलन भी तड़प उठा । उसके

मन में विरह की आग लग गई । लेकिन कन्नगी और मानाइहन का भय उसके मन को कचौटने लगा । सब कुछ वैसाही छोड़कर दूर कहीं भागने की बात कोवलन सोच रहा था । तीन-चार दिन वह कन्नगी के साथ जहाज पर बिताने के बहाने चला जाता है । कन्नगी के साथ एकांत में बैठकर वह आँखों से टकटकी साध केवल अपनी पत्नी को निहारता है । यह देख कन्नगी शर्माकर कोवलन से पूछती है , ऐसे क्यूँ देख रहे हो ? तब कोवलन कहता है , "देख रहा हूँ , तुम्हारी आँखों में ऐसी कौन-सी विशेषता है जो मुझे उच्छृंखल नहीं होने देती ? " [14] कन्नगी गुदगुदी भरी लज्जा से झुक जाती है । कोवलन अब अपनी मन की बातें कन्नगी से कहता ही जाता है । मेरा मन बहुत चंचल हो रहा है , मैं किसी एक जगह पर चाहकर भी अपने आपको रोक नहीं पाता । वह अपनी निर्बलता पत्नी के सामने प्रकट करता है । कन्नगी उसे समझाने का प्रयास करती है ।

कोवलन-कन्नगी के बीच वाद-विवाद शुरू होता है । तभी अचानक एक दूत आकर उससे कुछ आवश्यक संदेश देता है । कोवलन को वह बताता है कि मावधी ने जहर खा लिया है।

कोवलन दौड़कर माधवी के पास जाता है और बिलखकर रोने लगता है । पंद्रह दिन हो गये लेकिन किसी को कुछ खबर नहीं हुई कि कोवलन कहाँ गया है । मानाइहन ने अपनी शक्ति लगाकर सभी ओर कोवलन को ढूँढने की कोशिश की तो पता चला कि माधवी भी नगर से गायब है । कोवलन रूग्णा माधवी को लेकर उसी नाव से एक गाँव में उपचार करवाने चला गया।

दिन-रात एक कर कोवलन माधवी की सेवा में लगा रहा । दो विरही प्रेमियों का मिलन विविध लीलाओं के साथ नवोल्लासमग्न हो रहा था । माधवी ठीक होने पर उसने कई दिनों बाद कोवलन को अपने नृत्य से मुग्ध किया । कोवलन माधवी के साथ रहकर घर , व्यापार बाहर की दुनिया को भूलकर माधवीमय हो गया । वह कन्नगी , व्यापार , मानाइहन इन सबका मोह छोडकर केवल उनसे विद्रोह करने लगा। पंद्रह दिनों बाद माधवी ने कन्नगी की चिंता तथा अनेक सौगंध देकर कोवलन को नगर लौटने को कहा । लोकलाज को छोडकर श्वसुर के प्रति विद्रोही वृत्ति को अपनाकर कोवलन दृढता से कह उठा , "कोई मेरा कर ही क्या सकता है ? अपना स्वामी मैं स्वयं हूँ । . . . . और यों नहीं जाऊँगा माधवी ! मैं तुम्हें रथ में साथ बिठाकर नगरप्रवेश करूँगा । मैं तुम्हारे आगे बड़े-बड़ों के सिर नत कर दूँगा । " [15] ऐसी बाते कोलवन के मुख से सून माधवी मन ही मन खुश हो गयी । कावेरीपट्टणम् में आकर कोलवन माधवी के ही घर रहने लगा । अपने मुनीम वीलिनाथन को बुलाकर अपनी अनुपस्थिति के दिनों का

व्यापारिक विवरण कोलवन ने प्राप्त किया । अपने श्वसुर को अप्रतिष्ठित करने के बहाने उसने दो-चार व्यापारिक निर्णय गलत भी लिए । यह सब देख मुनीम वीलिनाथन ने भगवतभजन का कारण देकर नौकरी छोड़ी । कोवलन ने माधवी के लिए पान्सा का उदयान भवन मुँहमाँगे दाम पर खरीद लिया । प्रेम में अंधा होकर कोवलन सब गलत ही करता चला गया ।

नगर में इन सभी बातों से तहलका मच गया । मानइहन अपनी बेटी का दुःख देख किसी को भी अपना मुँह नहीं दिखाना चाहते थे । कन्नगी शांत थी । वीलिनाथन के जाने से दास-दासी , कोठी के कर्णिक , कर्मचारी आदि सब सकपकाए हुए थे । व्यक्तिगत लाभ के लिए कुछ लोग जाल फैलाने लगे । चारों ओर अनियंत्रण , अव्यवस्था फैल गयी । कोवलन माधवी के साथ पान्सा के उदयान में ही रहता था । माधवी कोवलन के मन को बहलाने के लिए हमेशा सतर्क रहती और यह ध्यान रखती कि रूप के हाट में कोई भी उसके प्रति ईर्ष्या प्रकट न करे । कोवलन की सुहाग रात पर और अपनी अभागी रात की घटना से प्राप्त अनुभव ने माधवी की वेश्या बुद्धि को और भी तेजस्वी बना दिया । नगर के अन्य चेट्टिगण अपनी वेश्याओं को माधवी के पास भेजकर कोवलन से मनमाना काम करा लेते थे । रात-रातभर नाचगाना चलता रहता । वेश्याएँ मदिरा के नशे में नगर के सारे युवक सेठों के नैतिक बंधन ढीले करने लगी । माधवी और कोवलन एकसाथ नगरभ्रमण के लिए निकलते । रात्री के मानवनिर्मित प्रकाश में चंदन , फूल , मिठाई बेचनेवालों की दुकाने , सुनार, खादयपदार्थों को बेचनेवाली दुकानों का प्रकाश ग्राहकों को अपनी ओर पतंग की तरह आकृष्ट करता था । असंख्य दीपकों के प्रकाश से कावेरीपट्टणम् का बंदरगाह अपनी जगमगाहट से इंद्र के स्वर्ग को भी लज्जित करता था । चारों ओर मालों से भरे जहाज खड़े रहते थे । समुद्रतट पर एक ओर बड़े-बड़े व्यापारी तथा राजकुल के लोग अपने मित्रों के साथ वेश्याओं की टोली लेकर रास-रंग करते थे ।

एक दिन कोवलन छत पर अकेला खडा सूर्यास्त के समय रंग-बिरंगी छटा देख रहा था । इतने में माधवी आकर उससे मीठी-मीठी बातें करने लगती है । लेकिन कोवलन गंभीर होकर अपने जीवन के बारे में सोच रहा था । अचानक वह बोल उठा, " हाँ ss ।''' विष तुमने पिया था माधवी , पर मरा मेरे संस्कारों का देवता ! वह देवता जो कन्नगी का सहारा पाकर प्रबल हो उठा था । यह देखो ! क्षितिज के इन सिंदूरी बादलों में तुम्हारे विष की ही साँवली पट्टियाँ पड़ रही हैं । " [16] कोवलन का मन चंचल होकर कन्नगी के शांत , संयत जीवन के बारे में सोचने लगा था । उसी वक्त माधवी को छोडकर वह कन्नगी के सामने कायर

वीर की भाँति आकर खडा होता है । कन्नगी ने अपने सुहाग देवता की आरती उतारी । अपने पति - परमेश्वर को बिठाकर उसके पाँव दबाते - दबाते उनकी अनुपस्थिति में घर में जो अच्छी घटनाएँ घटी थी, उसका सारा विवरण सुनाया । व्यापार के लंबे घाटे के बारे में काई भी चर्चा न की, पिता के नाम का उल्लेख भी न किया, माधवी के बारे में एक भी बात नही पूछी । यह देखकर कोवलन चिढ गया । उसने कहा, "कन्नगी ! मैं महीनों घर नहीं आया , तुम्हें कोई संदेश तक न भेजा, पर एक बार भी तुमने मुझे उलाहना नहीं दिया ? एक बार भी यह न पूछा कि कहाँ रहे, क्या करते रहे?"[17] कोवलन अपनी पत्नी को समझाता है कि घर के हर एक व्यक्ति के संबंध में तुम्हे जानकर रखनी होगी । यह तुम्हारा अधिकार है । मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, तुम मुझसे रूठती तो मैं तुम्हें मनाता हूँ । मैं तुम्हारा अपराधी हूँ, अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहता हूँ । तुम मुझे सच - सच बताना कि मेरी याद में तुम एक बार भी रोई नहीं । अपने पति के मुख से अपने मन की बातों को जाहिर होते देख कन्नी रो पड़ी । वह अपने पति को शांत भाव से बताती है कि मुझे पति को परमेश्वर मान उसके सुख में ही अपना सुख मानने के संस्कार मिले है । मैं आपकी दासी हूँ और दासी का दुख नहीं पूछा जाता । यह सब कहकर वह अपने पति के आलिंगन में बँधकर मानो अपना दुख बाँटकर विवशता को प्रकट करती रही ।

कन्नगी की बाते सून कोवलन ने माधवी के नाटक के बारे में खुद ही बताया। वेश्याओं की कुटिल नीति अब वह पुरी तरह समझ चुका था । अपनी पत्नी को वह यह एहसास दिलाना चाहता है कि तुमने कुलवधु के लिए आवश्यक सभी गुणों को जैसे आत्मसात किया है, वैसे ही पति के शयनकक्ष में पत्नी को वेश्याओं की तरह अपने पति को रिझाने की कल आनी चाहिए। कुछ दिन कोवलन और कन्नगी सुखी दंपति की तरह बिताते है । तभी माधवी कोवलन की पुत्री मणिमेखला की माँ बनी । माधवी अब परम सुख का अनुभव कर रही थी । कोवलन भी अपने मन को छलता जा रहा था । तभी माधवी में गृहिणीभाव जागा । वह सलज्ज बोली, "मेरी बेटी ने तुम्हें पिता का पद दिया है, तुम उसकी माँ के पगों में सुहाग के नूपुर तो दो ।"[18] कोवलन माधवी में अधिक गूँथथा चला गया । दूसरी ओर व्यापार की ओर से मुँह मोडता गया । जिसके परिणामस्वरूप मासात्तुवान की कारोबारी हवेली मे पान्सा के रिश्वतखोर कर्मचारी बैठे थे । कन्नगी की अवहेलना करना तथा माधवी को घर में बची हुई अमूल्य निधियों का पता देना ही उनका काम था । माधवी भी लालच से हर दिन कोई - न- कोई बहाना बनाकर कोवलन के नाम से

संदेश देकर कई चीजों को अपने यहाँ मँगवाती । एक दिन हवेली से उसने वंश वृक्षपट्ट मँगाया जिसपर अपनी बेटी का नाम वह लिखवाना चाहती थी। लेकिन कोवलन माधवी को समझाता है कि वंशवृक्षपट्ट पर वेश्यापुत्रि का नाम नहीं लिख जाता । सामाजिक प्रतिष्ठा की बात कहकर कोवलन माधवी को ऐसा करने से रोकता है । तब माधवी चोट खाई सिंहनी की भाँति तड़प उठती है, " सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न ! " माधवी चीखती, मुट्ठियाँ भाँजती खड़ी हो गई, "मै भी न्याय लूँगी । वेश्या बनाने के लिए डाकुओं, कुट्टनियों का जाल फैलाकर जब हमें व्यवसाय की वस्तु बनाया जाता है तब सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न क्यों लुप्त हो जाता है? मैं स्वेच्छा से वेश्या के यहाँ बिककर नहीं आई थी । मैं भी सती हूँ, मरे सम्मुख भी अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न है ।"[19] इसके बाद कोवलन और माधवी में इतनी अनबन बढ़ती है कि वह माधवी और नागरत्ना दोनों के झोंटे पकड़कर घर से बाहर निकालता है ।

माधवी वेश्या होकर भी सती की तरह एकनिष्ठ होकर जीना चाहती है । वह सोचती है कि वह भी अच्छे कुल से ही जन्मी है, लेकिन बचपन में वेश्याद्वारा खरीदा जाकर उसे समाज ने ही वेश्या बनाया है । वह अन्य स्त्रियों की तरह गृहिणीधर्म निभाकर समाज में आदर - सम्मान पाने के लिए ललायित है । इसलिए कोवलन की पुत्री की माता बनने पर वह तय करती है कि अपनी पुत्री के जीवन पर वेश्याओं की छाया भी पड़ने नहीं देंगी । वह उसपर कुलीनों के संस्कार कर उसे कुललक्ष्मी बनाना चाहती है । कोवलन से अनबन होने पर उसकी मौसी चेलम्मा उसे माधवी को पेरियनायकी के घर ले जाती है । चेलम्मा और पेरियनायकी इतने दिनों बाद मिलने के कारण दोनों बातचती करती बैठती है । लेकिन माधवी बिना एक भी शब्द कहे केवल अपने और अपनी बच्ची के भविष्य के बारे में सोच सिर्फ अपने में ही खोई हुई है । वंशवृक्षपट्ट की घटना माधवी के लिए जय - पराजय की कसौटी बनी । उसके अंदर प्रतिहिंसा की अदम्य ज्वाला भड़क रही थी ।

पान्सा तथा अन्या रोमन व्यापारियों के जाते ही नगर की सारी व्यापारिक कोठियों का दिवाला पिट गया । क्योंकि व्यावसायिक सौदे महाजनी कोठियों में नहीं , वरन् वेश्याओं के यहाँ होते थे । महाराज वर्षों से युद्धरथ थे , कभी सोच भी न पाते कि उनके राज्य में एक गहरा अर्थ-कुचक्र काम कर रहा है । उत्तर-दक्षिण के अन्य व्यावसायिक नगरों में कावेरीपट्टणम् की साख गिर गई थी । कोवलन के निकट संबंधी दो वयोवृध्द सेठों ने मानाइहन की स्फूर्ति जगाने के लिए कोवलन से मिलकर उन्हें समझाने का विचार किया । सेठों ने चतुराई खेली ।

उन्होंने माधवी को आश्वासन दिया कि उसकी मणिमेखला का विवाह राजरत्नम् के भानजे के साथ करा दिया जाएगा और इसके लिए कोवलन को उनसे मिलकर आग्रह करना चाहिए । माधवी तुरंत यह बात मानकर कोवलन को ऐसा करने के लिए पिछे पड़ गई । तब कोवलन कहता है , मैं तुम्हारे कारण जग-हँसाई तो भोग रहा हूँ लेकिन जो तुम कह रही हो वह समाज के लिए घातक है । अन्य दासियों की कोख से भी मेरी संताने उत्पन्न हुई है । सब वेश्यापुत्रियों के लिए मुझे ऐसी व्यवस्था करनी पड़ेगी । इसके लिए क्रांति की आवश्यकता है जो मेरे अकेलेद्वारा कदापि नहीं होगी । लेकिन माधवी हार माननेवालों में से नहीं है । यह कोलवन को समझाती है कि यह प्रस्ताव केवल मेरा ही नहीं है , बल्कि तुम्हारे समाज के प्रतिष्ठित वयोवृध्दजनों का है । सदियों से वेश्याओं के गर्भ से अनेक कुलपुत्रों की संताने जन्मी है । अपनी विलासजनित संतानों के लिए लोग सभी सुविधाएँ तो देते है लेकिन उनका विवाहसंबंध स्वजाति में नहीं कराते । कुलाचार भंग होने के डर से वे ऐसा नहीं कर पाते । माधवी कोवलन से पूछती है कि क्या कन्नगी की पुत्री मेरे संस्कारों को ग्रहण कर सकेगी ? मणिमेखला की माँ के संस्कार भी वही है जो देवी कन्नगी के है । मेरा जन्म भी किसी श्रेष्ठ कुल में ही हुआ है , इसलिए दुर्भाग्य के कोड़े खाकर भी मैं बदल न सकी । लेकिन फिर भी कोवलन के न मानने से वह निराश होती है । मन में प्रतिशोध की ज्वाला से वह हरदिन उत्सव , धार्मिक प्रवचन , भजन , कीर्तन कर वह यह दिखाना चाहती है कि उसमें और कुलवधुओं में कोई अंतर नहीं है । इसमें नगर की सारी वेश्याएँ , धर्मपंडित , आलवार आदि सब लोग मिलकर माधवी के आडंबर में साथ देते है । वह महाराज के आने के बाद उन्हें यह दिखाना चाहती है कि, नगर की व्यापारिक नीति वेश्याओं के कारण नहीं , बल्कि अंध , विलासी , लोभी व्यापारियों के कारण ही गिर गई है ।

नगर के कुछ व्यापारी , वृध्दजन मानाइहन सेठ के पास जाकर उन्हे तथा कोवलन को फिरसे व्यापार में लाने के लिए उकसाते है । मानाइहन को महाराज से मिलकर कुछ सहायता लेकर देश-विदेश में हमारे नगर की साख फिरसे बाँधने के लिए प्रेरणा देते है । लेकिन निराश मन के कारण वे पुनः व्यापार में आना ही नहीं चाहते । तब वृध्दजन उन्हें बताते है कि नगर के अन्य युवक भी अपने घरों में वुध्द माता-पिता और पत्नी को मारकर वेश्याओं पर धन लुटाने के कारण उनकी अवस्था कोवलन की तरह ही हो गई है । नगर की स्थिति में सुधार लाने क लिए वे लोग मानाइहन से प्रार्थना करते है । तब मानइहन सायंकाल कुछ लोगों सहित समुद्रतट पर जाकर वहाँ से मदिरा के नशे में धुत लड़खड़ाते कोवलन को उठाकर घर वापस लाते है । उसे

नगर का नवभाग्योदय करने की प्रेरणा देते है । कोवलन को लेकर हवेली में आते है । यह समाचार सुनकर दास-दासियों में उत्साह की लहर दौड़ आयी , लेकिन कन्नगी शांत , संयत आनंद और दुख दोनों भाव भी उसके चेहरे पर नहीं थे । मानाइहन अपने जमाता को नये सिरे से जीवन तथा व्यापार शुरू करने की बात समझाते है । कोवलन पत्थर की तरह बैठकर केवल सुनता ही रहता हैं । कन्नगी के आते ही पिता-पुत्री ने एक-दूसरे को देखा । कोवलन के घर न आने के कारण कन्नगी पिता के घर न गई थी । वर्षों बाद एक-दूसरे को देखने से दोनों की आँखों में भावावेश कारण आँसु उमड पड़े । मानाइहन ने बेटी को समझाते हुए कहा , "दैव के आगे किसी का वश नहीं बेटी ! मनुष्य तो मात्र अपनी सीमा में ही देख सकता है । मैंने कब यह सोचा था ! अस्तु , जो हुआ सो हुआ । उसे भूल जाओ । अपने पति को सांत्वना दो । संभव है उससे तुम्हारा , मेरा और सारे नगर का कल्याण हो । " [20] बेटी से बात कर थोड़ी देर बाद वे चले गये । कोवलन और कन्नगी दोनों एक-दूसरे को देख , बाते कर सुखी जीवन बिताने का सोचकर एक-दूसरे में खो जाते है ।

माधवी को कन्नगी , मानाइहन और सारे भद्र समाज पर क्रोध आता है । वह अपनी कोठी को खुद ही जलाकर आग-आग चिल्लाकर हुल्लड़ मचाती है । भवन का महत्त्वपूर्ण सामान ठेलों पर लादकर विश्वस्त अनुचरों को सौंपती है । नागरत्ना और अपनी बेटी को लेकर रथ पर सँवार होकर शत्रुओं को कोसती हुई सीधे कोवलन की हवेली में रहने जाती है । मानाइहन के संकेत से तथा अन्य वृध्दजन लोग अपने घरों का भविष्य देख पंचायत को आमंत्रित करते है । लेकिन पुरे नगर और पंचायत के सामने कोवलन कहता है कि , मैं माधवी को ठुकरा नहीं सकता । तब सभी लोग महाराज से न्याय लेने की बात पक्की करते है । यह सब सुनकर माधवी कोवलन के पास आकर रोने लगती है । वह कोवलन को समझाती है कि मैं और कन्नगी दोनों बहनों की तरह रहेंगे । कन्नगी दिन रात कोवलन , माधवी और मणिमेखला की सेवा करती है । कन्नगी अपने आभूषण बेच-बेचकर घर का खर्चा चलाती रही । माधवी अपनी दुष्ट वृत्ति के कारण हर दिन ऐसी किसी-न-किसी वस्तु की माँग करती है, जिससे अधिक खर्चा हो । एक दिन ऐसा आता है कि घर में एक छदाम भी नहीं बचता । तब माधवी कोवलन के कान भरती है कि तुम्हारी बीवी मुझे और मेरी बच्ची को भूखो मारना चाहती है । यह सद नाटक कर माधवी घर के सभी अधिकार कन्नगी से छिनती है । कन्नगी से कोवलन के जरिए मुख्य कोषागार की चाबियाँ हासिल करती है । बाद में सुहाग के नूपुरों की माँग करती है । कोवलन

भी इस प्रकार माधवी के हत्थे चढ़ा कि माधवी उससे वरदान माँगती है कि, महाराज के आने से पहले तुम मुझसे विवाह करो । कोवलन के साथ वह विवाह तो करती है , लेकिन नगर का एक भी आदमी इस विवाह में शामिल नहीं होता । विवाह के बाद वह सुहाग के नूपुरों की माँग कर कुललक्ष्मी के अधिकार पाना चाहती है ।

कोवलन जब कन्नगी से नूपुर माँगता है तो वह नूपुर देने से साफ इन्कार करती है । इस वजह से कोवलन उसे मार-मारकर शव की भाँति घसीटता हुआ हवेली के बाहर निकालता है।

कन्नगी बेसुध पड़ी रहती है । कोवलन का घुस्सा देख उस दिन उसके पास कोई भी न जा सका । चौखट पर डरी हुई मणिमेखला को देख उसे बिलखकर अपनी बाँहों मे लेकर कोवलन रोने लगा । थोडी देर बाद कन्नगी उठकर अपने पिता के घर न जाकर श्वसुरद्वारा बनाई गई धर्मशाला में जाकर रहती है । मानाइहन को जब यह बाते पता चलती है तो वे अपनी पुत्री को घर लाने के लिए धर्मशाला में जाते है । अपनी बेटी से कहते है, अगर तुम घर नहीं आयी तो मैं सबकुछ दान कर संन्यास ग्रहण करूँगा , यह सुनकर कन्नगी उन्हें संन्यास लेने के लिए कहती है । मानाइहन ने संसार त्याग किया और अपना सारा धन राज्यकोष में अर्पित किया ।

माधीव चारो ओर से घिर गई । इंद्रोत्सव पर महाराज के आने पर माधवी को मृत्यूदंड मिलने की नगरभर की चर्चा से माधवी डर गई । वह हर रोज कोई-न-कोई बहाना बनाकर कोवलन को कन्नगी से सुहाग के नूपुर लाने को कहती है । महाराज के जाने पर मैं फिर से नूपुरों को कन्नगी को दे दूँगी , ऐसी झुठी बातें करकरके कोवलन को धर्मशाला में भेजती है । मदिरा के नशे में कोवलन लडखडता हुआ कन्नगी के पास सुहाग के नूपुरों की माँग करता है तो वह कुल के अधिकारों के प्रति सचेत होकर कहती है , "सौभाग्य मेरे पूज्य श्वसुर ने प्रदान किया था । आपकी जीवनसहचरी बनने का अधिकार मुझे उन्होंने दिया था ।" [21] यह सब सुन कोवलन अपने क्रोध का आपा खो जाता है । वह कन्नगी के मुँह पर तमाचा मारता है । यह सब देख चेलम्मा बीच में आकर कोवलन का हाथ पकडती है । कोवलन सारी शक्ती लगाकर हाथ छुडाते हुए अपनी दासियों को चेलम्मा को मारने का आदेश देता है । यह सब सुन चेलम्मा बौखलाकर कहती है , "आ निगोड़े ! मुझे दासियों से पिटवाएगा ! तो चल, मैं तुझे बीच चौराहे पर घसीटकर ले चलूँगी । वहाँ मुझे पिटवाना ।" [22] ऐसा कहते-कहते वह कोलवन को घसीटते हुए बाहर ले गयी । तब कन्नगी ने चेलम्मा के पाँव पकड़कर अपने पति को मारने से रोका ।

अपने पति को समझाती है कि तुम बार-बार नूपुरों का आग्रह मत करो । आवश्यकता पडने पर मैं अपने प्राण दे दूँगी तब तुम इस सोने का मनमाना उपयोग करना ।

कोवलन भी मदिरा के नशे में लड़खड़ाता निराश होकर दार्शनिक की तरह माधवी के सामने आकर बैठता हैं । नूपुर साथ न लाने की वजह से माधवी चिढ़ जाती है । वह आवेश में आकर कहती हैं , "तो अब यों भी न बैठ पाओगे । मैं अब तुम्हें तुम्हारी चरम गति पर ही पहुँचाकर दम लूँगी । अपना सर्वस्व निछावर कर चुकने के उपरांत अंत में मुझे तुमसे कुछ न मिला । तुम मुझे सती न बना सके तो अब मैं तुम्हें वेश्या बनकर ही दिखलाऊँगी । निकल जाओ मेरे घर से ! उठो, जाओ ! " [23] यह कहकर वह नागरत्ना की मदद से कोवलन को मार-पीटकर घसीटते हुए घर के बाहर निकालती है । हिंसक बनकर आवेश में आकर वह वेश्या बनने के मत से दृढ़ होती है । कोवलन दिनभर बिना खाए-पिए घर के बाहर शव की भाँति पडा रहा । आज कोवलन पर माधवी के दास-दासी व्यंग्यबाण कसकर उसी पर हँस रहे थे । कोलवन मरना चाहता था लेकिन उसमें साहस नहीं था । माधवी के दास-दासी हवेली से सारा सामान बाहर निकालते रहे । माधवी अपनी बेटी के साथ शिविका पर बैठकर राजकुमार से मिलने जाने का नाटक कर रही थी । वह कोवलन को जलाना चाहती थी । लेकिन असल में तो वह हवेली छोडकर अपने घर वापस चली गई थी । यह सब देख कोवलन पर तीव्र आघात हुआ।

रात कों हवेली में जाकर वह माधवी को पागलों की तरह पुकारता रहा । लेकिन माधवी सच में चली गई थी । वह शराब पी-पीकर बेहोश को गया । आँख खुली तो पता चला कि उसके सारे आभूषण चोरी हो गये है और वह दुर्गंधि में पानशाला के पास बाहर पड़ा हुआ है । कोवलन की यह दशा देख लोग उसकी खिल्ली उड़ाते , ताने कसकर मजा ले रहे थे । वह एकदम निःसहाय हुआ था ।

कावेरी नदी में बाढ़ आने से आधा नगर डूब गया । महाराज के स्वागत में बनाए गए अनेक तोरण और मंडप बह गये थे । निर्धन-निराश्रित परिवार समुद्रतट पर शरण ले रहे थे । कोवलन भी भूख से इधर-उधर भटकता समुद्रतट पर आ गया । वहाँ आने पर उसे पता चला कि माधवी की ओर से बाढ़पीड़ितों को अन्नदान दिया जा रहा है । यह सूनकर वह आगे नहीं बढ़ सका । बालूपर ही पड़ा रहा । कोवलन को ऐसी स्थिति में देखकर सब लोग उपहास युक्त बाते कर उसे तड़पा रहे थे । किसी अन्य पुरुष के साथ माधवी के घुमने की बात सूनकर कोवलन देखना चाहता था कि वह व्यक्ति कौन है ? भूख-प्यास को दुर्लक्षित कर वह आगे बढ़ता

ही गया । माधवी के साथ राजपुरुष को देखकर कोवलन के तन-मन में आग लग गयी । वह माधवी को पागलों की तरह दहाड मारकर पुकारने लगा । लोग कोवलन पर हँस पड़े । कोवलन की गालियाँ सूनकर राजपुरुष ने अपने सिपाहियों द्वारा उसे पिटवाया । लेकिन फिर भी कोवलन माधवी को दोष देकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा कि इसी विश्वासघातिनी ने मेरा सर्वनाश किया है और वह अन्य लोगों का भी सर्वनाश करेगी । भीड़ मे से कोई एक हँसकर चिल्लाया, " अरे ! यह तुमने आज जाना ? यह तो वेश्या है , वेश्या । इसे मानवमात्र से द्वेष है । यह समाज का नाश करती है ।" [24]

यह सब सूनकर माधवी भी कोवलन पर बरस पड़ी । पुरुषों की विलासीवृत्ति के कारण वेश्या निर्माण होती है और समाज उसे अपनी विलासता का साधन बनाकर निकम्मा छोडता है । फिर वह समाज का सर्वनाश करे तो उसमें बुराई ही क्या है ? माधवी ने उत्तेजना में उसके मुख पर घृणा से थूकते हुए कहा , "दूर हट ! थूः ! तू भरी भीड़ में मेरा अपमान करेगा तो क्या मैं तुझे छोड दूँगी ! अब तूं वह कोवलन नहीं रहा जिसके कुल की साख नदियों और समुद्रों पार सारे विश्व में व्याप्त थी । भाग यहाँ से ! कामी कुत्ता कहीं का । " [25] सभी लोग आनंद लेकर यह सब तमाशा देख रहे थें । सिपाहियों द्वारा कोवलन पर कोड़े बरसाए जा रहे थे । बेसुधी की स्थिति में चेलम्मा उसे धर्मशाला में कन्नगी के पास लाती है । कन्नगी ने वैदयराज से कोवलन का उपचार कराया । कन्नगी का स्नेहभरा ठंडा स्पर्श दहकते मन को काफी सुख दे रहा था । कन्नगी की सेवा देख कोवलन के आँखों में पश्चाताप के आँसू उमड़ने लगे । कन्नगी अपने पति को मानसिक आधार देकर समझाने लगी कि पिछली सभी बातें भूलकर हम कहीं ओर जाकर नया जीवन शुरू करेंगे । इसलिए वह अपने नूपुर बेचने के लिए देती है , तो कोवलन आश्चर्यचकित होकर कन्नगी को देखने लगा । कन्नगी कहती है , कारोबार अच्छा होनेपर आप फिरसे ऐसे ही नूपुर मेरे लिए बनवाइए । हारे हुए पुरुष ने कन्नगी के रूप में अपना सबकुछ पा लिया था । मदुरा जाकर नया जीवन शुरू करने के उद्देश्य से कोवलन और कन्नगी अपनी जन्मभूमि छोडकर चले गये । उनके जाने के बाद बादल ऐसे बरसे कि सारा नगर डूब गया ।

कोवलन कुप्पुस्वामी स्वर्णकार की दुकान पर नूपुर बेचने जाता है । तो वहाँ पर कोवलन को महारानी के नूपुर चुराने के इल्जाम में गिरफ्तार किया जात है । लेकिन असल में कुप्पुस्वामी और कुछ राजकर्मचारियों ने मिलकर उसे गला-बेचकर खाए है । महारानी ने कठोर आज्ञा दी थी कि यदि नूपुर चोर पकड़ा नहीं गया तो समस्त राज्याधिकारियों को सूली दे दी जाएगी । इससे

बचने के लिए कुप्पुस्वामी स्वर्णकार ने कोवलन की भिखारी जैसी हालत देख उसपर नूपुर चुराने का इल्ज़ाम लगाया । कोवलन को बंदी बनाकर चौराहे-चौराहे पर घुमाकर सूली चढ़ाने की आज्ञा दी जाती है । कोवलन अपना अंत सोचकर पत्थर हो जाता है । पीठ पर सिपाहियों के डंडे पड रहे थे । लेकिन वह सोच रहा था कि नियति ने मुझे अकारण यह दंड क्यों दिया ? अपने हीन कर्मों का स्वयं प्रायश्चित करनेवाले व्यक्ति से नियति ने देहांत प्रायश्चित क्यों माँगा ? उसे सबसे ज्यादा 'चोर' यह शब्द खल रहा था । लेकिन वह भी तय करता है कि जाते समय अपनी साख बनाकर ही जायेगा । कन्नगी को जब यह सब बातें पता चलती हैं, तो उसे कई वर्षों पहले सिकंदरिया मिस्र की व्यापारिक यात्रा के वक्त भविष्यवक्ता भिक्षुणी की याद आती है । उस भिक्षुणी ने अपनी कहानी के द्वारा वैधव्य योग की ओर संकेत किया था । वह तुरंत ही अपनी दूसरे नूपुर की पोटली लेकर वहाँ पहुँची, जहाँ कोवलन को कोड़ों से सिपाही मार रहे थे।

वहाँ आवेश में चंडिका बन गई , "छोड़ दो मेरे पति को ! छोड़ दो ! वे चोर नहीं हैं । पांड्य राजा के यहाँ अन्याय हो रहा है । निर्दोष को चोर कहकर उसे सूली दी जा रही है । ऐसे अन्यायी राजा का शीघ्र ही अंत होगा । उसकी रानी के पैरों के सुहाग के नूपुर सदा के लिए उतर जाएँगे ।" [26] यह सब सूनकर लोग कन्नगी को महाराज के पास ले जाते है । तब वह अपने पति को निर्दोष सिध्द करने के लिए अपने दूसरे नूपुर प्रमाण के तौर पर दिखाती है । महाराज और महारानी ने कोवलन और कन्नगी को महल में बुलवाया । तब कन्नगी अपने विवाह पर श्वसुरव्दारा बनवाए गए नूपुरों की याद महाराज को दिलाती है । बाद में कावेरीपट्टणम् में घटी सभी बातों को बताने पर महाराज और महारानी ने उन्हें पुत्रवधु कहकर प्रसन्नता से सौभागयदान दिया और उन दोनों को पाँच लाख स्वर्णमुद्राएँ प्रदान कर नए जीवन की शुरूवात करने के लिए शुभकामनाएँ दी ।

उधर माधवी कोवलन से ईर्ष्यावशराजपुरुष से नजदीकियाँ इसलिए बढ़ाती है कि, महाराज के दंड से बच सके । राजपुरुष उसे बार-बार अपनी हवेली में बुलाता रहता है । एक दिन वह इंद्रोत्सव की तैयार कर रात को माधवी को अपनी हवेली में बुलाकर मीठी-मीठी बातों में फँसाता है । मदिरा के नशे में माधवी को भी मदिरा पिलाकर अपने रंग में रंग देता है । बाहर जोरों की बारिश और बादलों के गरजने का सिलसिला शुरू रहता है । उस दिन माधवी भी अपनी बेटी का भविष्य तथा एकपुरुष को तोड केवल राजपुरुष की ओर समर्पित होती है । सहसा बिजली जोर से कड़क उठी । माधवी के कलेजे से एक ही पुकार आ रही थी - "यह

टूटा तेरे दर्प का दमकता महल ! ओ सुहाग के नूपुरों की साध, मर ! मर ! " [27] बाहर प्रलयकारी तांडव से माधवी का भयकंपन उसकी केलिक्रीडा की सिरहन बन जाता है । राजपुरुष माधवी को अपनी विलासिता की पूर्तता का साधन बनाकर भोगता है और बाद में सेवक को बुलाकर माधवी को पैसों की थैली देने की आज्ञा देता है । राजपुरुष माधवी से कहता है कि, यह सब मैंने महाराज की आज्ञानुसार वेश्याओं को अपनी सीमाओं में बाँधने के लिए किया है । कुलवधुओं की प्रतिष्ठा के लिए समाज में नगरवधुओं को मर्यादा में बाँधना आवश्यक है । आज से कोई भी वेश्या दान, धर्म तथा वाणिज्य की आड़ में किसी सती को त्रस्त नहीं करेगी । महाराज परम न्यायी है । यह सब सूनकर माधवी पागल हो जाती है ।

कावेरीपट्टणम् नगर प्राकृतिक आपदा के कारण ध्वस्त हो जाता है । लेकिन माधवी कावेरी नदी की मृत्युवाहिनी धाराओं की चपेट से बच जाती है । कांचीपुरी के बौध्द विहार में बैठकर घंटों भगवान बुध्द की मूर्ति निहारा करती है । पागल, चेतनाशून्य, मृतप्राय होकर उसके मुख से केवल 'हाँ,' 'ना' के अलावा कोई शब्द ही नहीं निकलता । सब लोग कहते है कि किसी शाप के कारण उसकी ऐसी दशा हुई है । अति कुशल वादकों व्दारा वहाँ पर वीणा, मृदंग, घुँघरूओं की आवाज से वह स्तब्ध हो जाती है । एक दिन महाकवि इलंगोवन ने कावेरीपट्टणम् के जलप्रलय से प्रभावित होकर 'शिलप्पदिकारम्' (सुहाग के नूपुर) नामक एक महाकाव्य लिखा और सारी जनता को भी सुनाया ! सब लोगों के साथ वह पगली भी वह कथा सुनती है । अंत में महाकवि के पास आकर कहती है कि, "सारा इतिहास सच-सच लिखा है, देव ! केवल एक बात अपने महाकाव्य में और जोड़ दीजिए-पुरुष जाति की स्वार्थ और दंभ-भरी मूर्खता से ही सारे पापों का उदय होता है । उसके स्वार्थ के कारण ही उसका अर्धांग-नारी जाति पीड़ित है।

एकांगी दृष्टीकोण से सोचने के कारण ही पुरुष न तो स्त्री को सती बनाकर सुखी कर सका और न वेश्या बनाकर । इसी कारण वह स्वयं भी झकोले खाता है और खाता रहेगा । नारी के रूप में न्याय हो रहा है, महाकवि ! उसके आँसुओं में अग्निप्रलय भी समाई है और जलप्रलय भी ! " [28]

नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में आदर्श नारी के रूप में कन्नगी को चित्रित किया है । भारतीय स्त्री समर्पण करना जानती है , उसे अपने पति पर विश्वास होता है । पति चाहे उसके साथ कितना ही कठोर क्यों न हो लेकिन वह अपने पति को संतुष्ट करने के लिए सदैव प्रयत्न करती रहती है । नए सिरे से नया जीवन आरंभ करने के लिए प्रेरणा तथा शक्ति

सम्मान नहीं पा सकती ; इस शाश्वत सत्य को भी उन्होंने अपने उपन्यास के जरिए सिद्ध किया है । नारी के सती रूप की प्रशंसा कर वेश्याओं के प्रति भी सहानुभूति दिखाई है । प्रस्तुत उपन्यास में वेश्या के रूप में चेलम्मा, पेरियनायकी तथा देवदासी प्रथा को चित्रित किया गया है ।

गौण कथा -

प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख कथा के विकास के लिए गौण कथा की योजना की गई हैं । वेश्या अम्मा के रूप में पेरियनायकी हमारे सामने आती है । जिसने रोमन व्यापारी पान्सा सेठ को अपने प्रेमजाल में फँसाकर सारी उमर एक ही पुरुष के साथ संबंध स्थापित किया है । उस व्यापारी से उसने खूब धन कमाया है । अपने भविष्य की चिंता कर उसने तीन साल की एक बच्ची को खरीद लिया । उसे वह बड़े लाड़-प्यार से पढ़ाई-लिखाई , नृत्य , संगीत आदि सबकुछ वेश्या के लिए आवश्यक सभी गुण सिखाती है । माधवी को वह खुद की बेटी की तरह प्यार करती है । नृत्योत्सव में माधवी जब पुरस्कार प्राप्त करती है तो वह बड़े उत्साह से उत्सव मानती है । कोवलन जैसे धनी पुरुष को अपने प्रेमजाल में फँसने के लिए वह माधवी को वेश्याओं की कुटिल नीति तथा नाटक कर अपने मोह में बाँधने की कला सिखाती है ।

माधवी जब कोवलन से एकपुरुषव्रत साधकर कोवलन की सुहागरात पर कन्नगी को नीचा दिखाना चाहती है तो पेरियनायकी उसे समझाना चाहती है कि वेश्या केवल धन से प्रेम करती है और पुरूष उसका माध्यम है । हमें केवल प्रेम का नाटक कर अपने ग्राहकों से धन कमाना चाहिए । लेकिन माधवी कुललक्ष्मी बनने के मोह में कोवलन से तिरस्कृत होती है । नगर में पेरियनायकी और माधवी को निकालने के लिए आंदोलन होते है, तब पेरियनायकी पान्सा सेठ का आधार पाती है । पान्सा से कहती है , "मेरे लिए माधवी तुमसे बढ़कर नहीं स्वामी ! यदि उसके लिए ही वे लोग आपसे अटकते हैं तो उसे मैं अच्छा होते ही इस घर से हटा दूँगी ।" [29] पान्सा को अपने प्राणों से भी प्रिय समझनेवाली पेरियनायकी अपने स्वार्थ के लिए माधवी को भी घर से निकालने के लिए तैयार हो जाती है । तथा सेठ मानाइहन के कारण पान्सा का जलसार्थ लुट जानेपर पेरियनायकी उसे छोड़ती है । धूर्त, स्वार्थी वेश्या अम्मा के रूप में वह पाठकों के सामने आती है ।

उपन्यास में चेलम्मा को एक सशक्त बूढी वेश्या के रूप में चित्रित कर उसके द्वारा समाज प्रबोधन भी दिखाया है । चेलम्मा को छोटी उम्र में ही मोल लेकर मार-पीटकर वेश्या बनाया गया है । चेलम्मा अपनी जवानी में 'कामदेव का नवधनुष' पुरस्कार प्राप्त कर चुकी थी। उसके पिछे अनेक सेठ, साहुकार, महाजन आदि कई सुप्रतिष्ठित लोग चेलम्मा के चरणों पर गिरकर प्रेमयाचना करते थे । लेकिन वह भी अपने रूप के हाठ में अनेक युवकों को झिड़कारती थी । विदेश में भारतीय प्रेमी को अपमानित कर विदेशी प्रेमी को रिझाकर भारत में ले आती है । बाद में उस व्यापारी की मृत्यु के पश्चात उसे खूब धनसंपत्ति प्राप्त होती है । लेकिन वह जिस स्वदेशी प्रेमी को चाहती है वह चेलम्मा को नही मिलता । अब बुढ़ापे में श्वेतकुष्ठ से रोगग्रस्त हो जाने पर नगर के सभी लोग उसका स्पर्श तक अपवित्र मानते है । पेरियनायकी द्वारा घर से निकाले जाने पर वह पड्डिनपाक्कम् मुहल्ले में भिखारन बनकर बैठती है । माधवी में वह अपना प्रतिरूप पाती है । तथा चौराहै पर बंदरों का खेल दिखाकर सेठ, साहुकार, महाजनी पुरुषों की विलासिता और मूर्खता का पर्दाफाश करती है । अपने व्यंग्यबाणों के द्वारा लोगों का मनोरंजन कर बंदरों के खेलद्वारा वह दिखाना चाहती है कि पुरुष कभी एक स्त्री के प्रति न्याय नहीं कर पाता ।

वह कन्नगी के साथ धर्मशाला में रहती है । समुद्रतट पर कोवलन को मार-मारकर बेसुध किया जाता है, तब वह कोवलन को धर्मशाला में लाकर इलाज करवाती है । बाद में कोवलन-कन्नगी को नया जीवन शुरू करने के लिए शुभाशीर्वाद देती है ।

इस प्रकार नागर ने पेरियनायकी और चेलम्मा आदि वेश्याओं का चित्रण किया है । तथा उन्होंने वेश्याओं में होनवाले उच्च-नीच वर्गभेद का भी चित्रिण किया है । 'इलङ्.गाइ', 'वलङ्.गाइ' इन दो वर्गों में कुलीन-अकुलीन भेद माना जाता था । चेलम्मा और पेरियनायकी नीच वेश्याकुल की वेश्या है । तो राजम्मा वंश-परम्परा में प्रतिष्ठित वेश्याकुल की वेश्या है । प्रस्तुत उपन्यास में नागर ने देवदासी प्रथा को भी चित्रित किया है । देवदासी प्रथा याने भगवान की आड लेकर मंदिर में किया जानेवाला काम-विलास ही है । लेकिन देवदासियों की ओर देखने का समाज का दृष्टिकोन अलग होता है । उन्हें नगर के सभी समारोह में आदर-सम्मान का स्थान दिया जाता है । प्रस्तुत उपन्यास में देवदासी रुद्रम्माल को नृत्योत्सव तथा विवाहोत्सव में प्रमुख अतिथियों के साथ सभामंडप में महाराज की बाईं और बैठने का स्थान दिया जाता है ।

रूपजीवाओं की दुनिया में ये देवदासियाँ खुद को उच्च तथा प्रतिष्ठित महसूस करती है । देवदासियों में भी 'दत्ता' और 'हृत्ता' वर्ग माना जाता है । एक प्रसंग के द्वारा देवदासियों के जीवन का गम भी दिखाया है ।

एक दिन राज्य के महादंडनायक उपवन में वेश्याओं के साथ विलासरत था । गलती से वेश्याओं में दो महाजनवर्ग की दो लड़कियाँ शामिल होती है । स्वार्थ में महादंडनायक अपराधी काम कर बैटता हैं । उसमें से एक लड़की का 'रूद्रगोपिका' वर्ग की देवदासी अपने घर ले जाती है, तो दूसरी मंदिर की 'भृत्या' देवदासी इन दोनों को छिपाकर रखती हैं । लेकिन नगर के बच्चे-बच्चे को विदित हो गया कि सीमा की लूट में उड़ाई गई लडकियाँ कहाँ है । रूद्रगोपिका ने एक लड़की का गला घोटकर उसका शव कुएँ में फेंक दिया । दूसरी लड़की 'दत्ता' के रूप में स्वयं देवसेवा में अर्पित होने जा रही थी । मंदिर की अन्य प्रतिष्ठित देवदासियों ने इस पर आपत्ति उठाई । तो अंत में उसे 'हृत्ता' वर्ग में डाला गया । इसके लिए प्रतिष्ठित देवदासियों ने प्रमाण दिया कि नई देवदासी स्वेच्छा से देवसेवा में अर्पित होने नहीं आई, इसलिए उसे 'दत्ता' वर्ग में शामिल नहीं किया जाएगा । इस तरह प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित भेद माना जाता था ।

संक्षेप में नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में प्रमुखतः कुलवधु और नगरवधु संघर्ष को चित्रित किया है । पुरुषप्रधान संस्कृति के कारण ही भारतीय नारी हमेशा से ही पीड़ित रही है। वेश्या तथा देवदासियों की समस्या को चित्रित करके उन्होंने पीड़ित नारी जाति को अभिव्यक्त किया है । साथ ही सतियों का गुणगान भी किया है । दुष्कर्मों का फल कोलवन के चरित्र के माध्यम से दिखाकर अंत में उसे अच्छे मार्ग की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है । सभी दृष्टियों से इस उपन्यास को सफलता मिली है ।

निष्कर्ष

अमृतलाल नगार का 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास तमिल महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' पर आधारित है । उपन्यास में उन्होंने नारी की विवशता और कुलवधु, नगरवधु संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है । उपन्यास में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने के कारण, उपन्यास की कथा ऐतिहासिक होकर भी आधुनिक स्थिति से मेल खाती है । इस किताब में यह देखने को मिलता है कि वेश्याएँ भी कुलवधु बनने के लिए हरदम तड़पती है । लाख ईमानदार रहने पर भी समाज वेश्या को कुलवधु का सम्मान नहीं देता, उसका संबंध कोवलन धन से ही जोडा जाता है। उसके बलिदान को उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है । 'सुहाग के नूपुर' में माधवी की स्थिति भी यही है , इसलिएं माधवी आज की वेश्याओं का प्रतिनिधित्व करती है । तो दूसरी ओर कन्नगी को पग-पग पर अपमान सहनेवाली, पति की दासी बन उसकी सेवा करनेवाली आदर्श भारतीय नारी के रूप में चित्रित किया है । कोवलन को चंचल रूपासक्त मन का प्रतीक रूप में चित्रिण किया है ।

नगर के सर्वाधिक धनी व्यापारी मासात्तुवान के पुत्र कोवलन का विवाह नगर के दूसरे धनिक व्यापारी मानाइहन की पुत्री कन्नगी से होता है । परंतु विवाह के पूर्व ही राज्य की ओर से प्रतिष्ठित 'कामदेव का नवधनुष' पुरस्कार प्राप्त नृत्य कुशल माधवी के आकर्षण में कोवलन बँध जाता है । फलस्वरूप विवाहोपरान्त सामाजिक मान्यताओं और प्रेमाकर्षण में वह द्विविधाग्रस्त स्थिति में फँसता है । नागर 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में यह दिखाना चाहते है कि, पुरुष अपने एकांगी दृष्टिकोण के कारण न तो धर्मपत्नी को सुखी रख सकता है और न ही वेश्या को कुलवधु का सम्मान प्रदान कर सकता है । माधवी सुहाग के नूपुर हासिल करने के लिए तड़पती है, विविध बहाने बनाकर, छल-कपटकर, इतना ही नहीं कोवलन के पुत्री की माँ बनने पर भी वह सती का सम्मान प्राप्त नहीं कर सकती । माधवी के उत्पात से कन्नगी और कोवलन भी सुखी नहीं रह पाते। लाख कोशिश करने पर भी सुहाग के नूपुर न मिलने पर वह विद्रोहिनी बन जाती है । ईर्ष्यावश वह कोवलन को मार-पीटकर घर से निकालकर वेश्या बनने की ठान लेती है । वह कोवलन के बड़प्पन को चूर-चूर करना चाहती है । कोवलन से बदला लेने के लिए वह राजपुरुष का आश्रय प्राप्त करती है और वही पुरुष माधवी के अहं को, सतीत्व को तोड़ देता है। नागर ने वेश्या माधवी के द्धारा सामाजिक न्याय की बात उठाई है । चाहे सामाजिक वास्तविकता दिखाने के लिए ही क्यों न हो अमृतलाल परम्परागत धारणाओं को लेकर चले है ।

वे समाजव्दारा स्वीकृत मूल्यों का तिरस्कार नहीं करते । प्रेम त्रिकोण में उन्होंने यह दिखाया है कि, वेश्या का फल वेश्या को और सती को फल सती का मिलता है । ऐतिहासिकता का आधार लेकर लेखक ने ई. सन 1960 में कोवलन को समाज के सामने हतबल दिखाकर सनातनी समाज का मार्मिक चित्र अंकित किया है।

कन्नगी के स्वभाव में शांत और संयमी स्त्री का चित्रण कर, आदर्श भारतीय नारी के रूप में उसका चित्रांकन करने में नागर को सफलता मिली है । पतिव्रता पत्नी तथा कुललक्ष्मी अपने पति के लिए हर प्रकार के जुल्म बर्दाश्त करती है, लेकिन अपनी जबान से उफ् तक नहीं करती । कोवलन जब उसे मार-पीटकर घर से निकालता है, तब वह अपने धनी पिता की हवेली में न जाकर अपने श्वसुर ने बनाई धर्मशाला में जाकर रहती है । कन्नगी हर हालत में अपने कुल की मानरक्षा करती है । कोवलन जब माधवी के साथ रहकर महिनों घर नहीं आता, तब भी वह कई वर्ष अपने पिता से मिलने भी नहीं जाती । इससे पता चलता है कि, कुललक्ष्मी के संस्कारों से वह परिपूर्ण है। उसकी इस सहनशीलता का फल उसे अंत में मिलता है, वह जीवन में सफल होती है । सती-सावित्री की तरह अपने पति को प्राणदंड से बचाकर, नए सिरे से नया जीवन आरंभ करने के लिए उसे शक्ति तथा प्रेरणा देती है ।

'सुहाग के नूपुर' में अमृतलाल नागर ने वेश्या समस्या को कोरी यथार्थवादी भूमि पर चित्रित किया है । चाहे समाज कितनी भी प्रगति और परिवर्तन की बात करें, लेकिन वेश्या के साथ विवाह और सम्मान आज भी दुर्लभ है । इसलिए उन्होंने माधवी को नूपुरों से वंचित रखा। साथ ही उपन्यास में नागर ने वेश्यागामी पुरूषों के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है । पुरुषप्रधान संस्कृति के कारण युगों से नारी जाति पीडित है-चाहे वह कुलवधु हो या नगरवधु हो। लेखक मे नारी शोषण की शाश्वत समस्या को इतिहास से खोज निकालना चाहा है । इस शाश्वत सत्य की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है कि, वेश्या जन्म से नहीं होती समाज के विकृत पुरुषोंद्वारा उसे वेश्या बनने पर मजबूर किया जाता है । नागर ने उपन्यास द्वारा केवल वेश्या की वेदना ही नहीं, बल्कि सती की प्रताड़ना का करूण क्रंदन पाठकों तक पहुँचाया है । इसी में अमृतलाल नागर की श्रेष्ठता और सफलता है ।

कथा ऐतिहासिक है, अतःविस्तार से घटनाएँ आई है । प्रमुख कथा कोवलन, कन्नगी और माधवी की है । प्रमुख कथा के विकास के लिए अनेक प्रासंगिक घटनाओं को लिया गया है । कथा ऐतिहासिक होते हुए भी कहीं भी कथा-प्रवाह रूका नहीं है, उसमें एक प्रवाह हैं, जिज्ञासा

हैं, आत्सुक्य हैं । यह औत्सुक्य अंत तक बना रहा है । तात्पर्य - 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की कथावस्तु रोचक और प्रभावी है ।

उपन्यासकार का उद्देश्य सफल हुआ हैं । तात्पर्य - कथा नारी जीवन के विविध पहलुओंपर आधारित है । कथा में अनेक छोटे-छोटे प्रसंग है फिर भी कही भी कथा विशृंखलित नहीं हुई है । उपन्यासकार का उद्देश्य पतिव्रता नारी की महत्ता को, उसकी विजय को सिध्द करना है और वे उसमें सफल हुए हैं । ऐतिहासिक धरातल होते हुए भी कथा प्रवाहित हुई है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 16
2	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 16
3	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 53
4	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 53
5	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 54
6	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 55
7	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 56
8	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 58
9	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 63
10	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 79
11	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 79
12	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 80
13	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 83
14	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 119
15	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 122
16	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 125
17	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 128
18	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 133
19	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 138
20	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 156
21	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 185
22	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 185
23	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 187
24	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 195
25	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 196
26	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 218-219
27	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 209
28	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 223
29	अमृतलाल नागर - सुहाग के नूपुर	पृ. क्र. 96